14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख (कविता)

रचनाकार का परिचय : निर्मला पुतुल, जन्म – 6 मार्च 1972 ई0। प्रमुख रचनाएँ :– नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में।

अधिगम प्रतिफल :

- कविता पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों–वर्णत्मक, भावात्मक, प्रकृति–चित्रण को पहचानते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- अपने पाठ और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात प्रभावी तरीके से लिखते है।

पाठ का परिचय– प्रस्तुत पाठ में विकास के नाम पर प्रकृति के दोहन का चित्रण हुआ है। प्रकृति का मानवीरण करते हुए कवयित्री ने हमारी संवेदनाओं को झकझोरने का प्रयास किया है एवं प्रदूषण से हो रहे दुष्प्रभावों की चर्चा करते हुए प्रकृति को प्रदूषित न करने के लिए प्रेरित किया है।

सार–संक्षेप

इस कविता में कवयित्री ने दिन–प्रतिदिन दूषित हो रहे पर्यावरण के प्रति संवेदना व्यक्त की है। कवियत्री कहती हैं कि जिस समय पेड़ काटे जाते हैं, पेड़ कुल्हाड़ी का वार सहता है, उसकी टहनियाँ हिल जाती हैं लेकिन वे अपने बचाव में कभी हाथ नही उठाते। क्या तुमने पेड़ के दर्द को सुनने की कोशिश की है? आज दूषित पर्यावरण के दुष्प्रभाव से नदियाँ जो अंधकारमय भविष्य के डर से मुँह झाँप कर रो रही हैं, उसके रोने की आवाज को तुमने रात में सुनने का प्रयास किया है? जिस घाट पर तुम कपड़े और मवेशियों को धो रहे हो उसके बारे में कभी तुमने सोचा है कि – घाट पर कोई प्यासा पानी पीता है तथा कोई स्त्री देवता को अर्ध्य भी देती है। बम विस्फोट से दहलता पहाड़ का हृदय, हथौड़े की चोट से कराहते पत्थर की पुकार, दूषित वायु जैसे खून की उल्टी कर रही दूषित हवा को महसूस किया है। कभी शिकायत न करने वाली बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख जानने का प्रयास किया है। यदि इस भीषण समस्या के प्रति भी तुम संवेदनशील नहीं हो तो तुम्हारे आदमी होने पर

© JCERT not to be republished

मुझे संदेह है। इस प्रकार, कवयित्री ने यहाँ पेड़ का क्रियाकलाप मनुष्य की तरह रचकर मानवीकरयण अलंकार का प्रयोग किया है।

पद्यांश की व्याख्या–1

क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ो की चीत्कार ?
कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते
हजारों हजार हाथ
क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

शब्दार्थ –

चीत्कार – कष्ट या पीड़ा में चिल्लाने की आवाज

धमस – चोट, आघात की गूँज

व्याख्या –

कवयित्री कल्पना करती है कि मनुष्य की तरह पेड़ भी भयभीत होते हैं। वे भय से चीखते–चिल्लाते भी हैं। वे भी बचाव के लिए पुकारते हैं। उनके सपनों में चमकती हुई कुल्हाड़ियाँ पेड़ को काटने के लिए तैयार हैं, और पेड़ डर कर चीख रहे हैं। कवयित्री पेड़ों की ओर से कुछ सवाल इस सभ्य समाज को पूछती हैं। वह समाज जो पेड़ों के साथ नहीं जीता बल्कि उसका उपयोग कर उसे नष्ट करता है। इन

© JCERT not to be republished

पंक्तियों में एक बड़ी चिंता व्यक्त की गई है – घटते हुए वृक्ष, घटती हुई हरियाली और मानव–जीवन पर इसका विनाशकारी प्रभाव हमें भय से, चितकार से कोइ सरोकार नहीं है। वास्तव में हमें यह दुख महसूस करना चाहिए क्योंकि जब पेड़ नहीं रहेंगे तो हम भी नहीं रहेंगे। कवयित्री ने पेड़ के अंगों में मानव के अंगों की कल्पना की है। यह कल्पना हमें दूसरों के दुख से जोड़ती है, हममें समानुभूति का भाव जगाते है और प्रकृति से जोड़ कर अधिक उदार बनाती है। आपने पेड़ों को हवा में झूमते देखा है, बरसात में भीगकर स्वच्छ होते देखा होगा। जब किसी पेड़ को काटा जाता है तो जिस तरह टहनियाँ डोलती हैं उन्हें देखकर लगता है बचाव के लिए हजार–हजार हाथ पुकार रहे हैं। जब हमारा कोई आत्मीय छोड़कर चला जाता है तो बेहद पीड़ा होती हैं किसी पेड़ के कटकर धरती पर गिरने पर उसकी आवाज उसी तरह ठेस पहुँचाएगी, मानो हमारा ही कोई हिस्सा कटकर गिरा हो। एक मजबूत, हवा के स्पर्श से झूमने वाला पेड़ जब धरती पर गिर जाए तो कितना आघात पहुँचता है। क्या हम सबके लिए इस आघात को महसूस करना जरूरी नहीं है ?

इस संदर्भ में चिपको आंदोलन के विषय में भी जान सकते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:–

प्रश्न 1– 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता किस बारे में है ?

प्रश्न 2– कवयित्री ने पेड़ों के बारे में क्या बताया है ?

प्रश्न 3– कवयित्री पेड़ों के लिए किनसे सवाल कर रहे हैं ?

प्रश्न 4– कवयित्री ने पेड़ों के लिए मनुष्य से क्या कहा है ?

पद्यांश की व्याख्या–2

'सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ ?
इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी

© JCERT not to be republished

या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी

किसी देवता को अर्घ्य''

शब्दार्थ –

मुँह ढाँप	–	मुँह ढककर
मवेशी	–	पालतू पशु
अर्घ्य	–	जल या दूध आदि देवता को अर्पित करना

व्याख्या –

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने धरती की जीवन–रेखा यानि नदियों के दुख का वर्णन किया है। आपने देखा होगा कि नदियों में कारखानों का गंदा पानी गिराया जाता है, कूड़े–कचड़े डाल दिए जाते हैं। श्रद्धा तथा धर्म के नाम पर कई चीजें बहाते हैं। प्रतिबंध के बावजूद साबुन लगाकर नदी में स्नान करते हैं। इस तरह स्वच्छ बहने वाली नदियाँ कब गंदगी से भर गई पता ही नहीं चला। कवयित्री इसी बात से दुखी हैं। वह हम सबसे पूछती हैं क्या तुमने रात के सन्नाटे में मुँह ढककर रोती हुई नदियों क आवाज सुना है ? नदी के घाट पर कपड़े धोते अथवा मवेशियों को धोते हुए कभी सोचा है कि कोई प्यासा गंदा पानी पी रहा होगा अथवा देवताओं को अर्घ्य के रूप में कोई स्त्री वही गंदा अथवा प्रदूषित अपवित्र जल चढ़ा रही होगी।

ये पंक्तियाँ हमें कई बातों पर सोचने के लिए प्रेरित करती है। कभी–कभी हम ऐसी चीजों का दुरूपयोग करते हैं, जिन पर दूसरों का भी अधिकार है। प्रकृति हमारे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम नदियों को साफ रखें, उन्हें सुखने से बचाएँ, जल के अन्य स्रोतों जैसे–तलाब, झील, कुएँ, आदि को बढ़ावा दें, ताकि नदियों पर निर्भरता थोड़ी कम हो और उनमें पानी बना रहे। हम जब भी पानी का उपयोग करें, तो यह याद रखें कि इसकी जरूरत औरों को भी है। संसार की बहुत बड़ी आबादी प्रदूषित पानी का उपयोग करने के लिए विवश है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:–

प्रश्न 5– 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के दूसरे अंश में कवयित्री किससे दुख के बारे में और क्या बता रहे हैं ?

प्रश्न 6– कवयित्री ने मनुष्य से नदी के दुख के बारे में क्या पूछा है ?

प्रश्न 7– हमें नदी को साफ रखने के लिए क्या करना चाहिए ?

© JCERT not to be republished

पद्यांश की व्याख्या–3

'कभी महसूस किया
कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ की सीना
विस्फोट से टूटकर
जब छिटकता दूर कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से
टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख?

शब्दार्थ –

किस कदर – किस तरह से

छिटकना – टूट कर दूर जाकर गिरना

व्याख्या –

कविता के इस अंश में कवयित्री के द्वारा पहाड़ की भयंकर यातना को महसूस करने का आग्रह किया गया है। आपने मनुष्य के लिए 'दिल दहलना' का प्रयोग सुना ही होगा किसी भयानक विपत्ति को देखकर व्यक्ति का दिल दहल जाता है अर्थात् वह भीतर तक काँप जाता हैं

पहाड़ की विशालता को देखकर लगता है जैसे ऋषि–मुनियों की तरह मौन होकर समाधि में बैठा हो। लेकिन यह कल्पना असुंदर की तरह हो जाती है जब इसने साथ मनुष्य का व्यवहार जुड़ता है। मनुष्य एक तरफ निर्माण करता है तो दूसरी तरह विध्वंस भी करता है। मनुष्य ऊँची–ऊँची इमारतें बनाने के लिए पत्थर, सीमेंट आदि पाने को पहाड़ में डाइनामाइट लगाकर उसमें विस्फोट करता हैं जब पहाड़ विस्फोट से टुटता है, तो ऐसा लगता है, मानो मनुष्य के इस व्यवहार से उसका सीना दहल गया हो। कोई ठोस चीज बहुत तेज आघात या चोट से टूटती है, तो उसके कुछ टुकड़े तेज गति से बहुत दूर

© JCERT not to be republished

तक इधर–उधर जा गिरते हैं। इन टूटे हूए टुकड़ों को छिटकना कहते हैं। पहाड़ के सीने पर मनुष्य तेज आघात करता है इससे उसके पत्थर छिटककर दूर गिरते हैं। कवयित्री हथौड़े की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख सुनने का आग्रह करती हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रश्न 8– 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता के तीसरे अंश में कवयित्री किसके दुख के बारे में बता रही हैं ?

प्रश्न 9– पहाड़ को क्या दुख है ?

पद्यांश की व्याख्या–4

'खून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े ?
थोड़ा–सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख ?
अगर नहीं, तो क्षमा करना।
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है।''

शब्दार्थ –

पिछवाड़े – घर के पीछे का हिस्सा

गुमसुम – चुपचाप

व्याख्या –

आपने सुना होगा कि खून की उल्टियाँ करना एक भयंकर रोग का लक्षण होती है। वह भयंकर रोग है – टी. बी.। इसे क्षय रोग भी कहते हैं। यह प्रायः फेफड़ों में होता है और इसका मुख्य कारण है

© JCERT not to be republished

फेफड़ों को स्वच्छ वायु न मिलना। आप वायु प्रदूषण के कारण जानते होंगे – बड़े–बड़े कारखानों में लगी मशीनें, धुआँ, उगलती चिमनियाँ सड़कों पर गाड़ियों की लंबी–लंबी कतारें, वायु प्रदूषण से खुद वायु भी रोगी हो जाती है, इसलिए कवयित्री ने हवा को खून की उल्टियाँ करते दिखाया है।

कविता के इस अंश में एक शब्द आया है – पिछवाड़े। यह शब्द विशेष उद्देश्य से प्रयुक्त है। घर के पीछे का हिस्सा उपेक्षित ही होता है। हमारा सारा ध्यान मुख्य द्वार की सफाई और सजावट पर होता है। मनुष्य विकास के बड़े–बड़े दावा करता है, अपनी उपलब्धियों को गिनाता है परंतु इन विकास कार्यों से फैलने वाली गंदगी अर्थात प्रदूषण को नजर अंदाज करता है। इन पंक्तियों के माध्यम से हवा को प्रदूषित होने से बचाने का आग्राह है।

कविता की अंतिम पाँच पंक्तियों में कवयित्री ने पृथ्वी को बूढ़ी औरत के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके दुख को प्रकट किया है। हम अपने आस–पास भी बुजुर्गों को देखें तो जानते हैं कि जिन बच्चों को उन्होंने पाल–पोस कर बड़ा किया उनके पास इतना भी समय नहीं होता कि वे उनका सुख–दुख बाँट सकें। ऐसे में ये बड़े–बूढ़े बहुत उदास, चुप तथा दुखी रहते हैं। इन बुजुर्गों की तरह ही हमारी पृथ्वी की स्थिति हो गई है। लेकिन, पृथ्वी को 'बूढ़ी' क्यों कहा गया है ? जब इसकी सुंदरता इसका जीवन पेड़–पौधे, नदियाँ, पहाड़ सब नष्ट हो रहे हों तो यह युवा कैसे रह सकती है। मनुष्य भी जब अपने अंगों को कमजोर महसूस करने लगता है तो बूढ़ा हो जाता है। मनुष्य अपने को चुस्त–दुरूस्त रखने के लिए सुबह शाम सैर करता है, वह व्यायाम करता है, और खान–पान का ध्यान रखता है। उसे इतना ही ध्यान से अपनी पृथ्वी का भी ध्यान रखना चाहिए। मनुष्य से आशा की जाती है कि वह पृथ्वी का दुख समझे। ऐसी संवेदनशीलता मनुष्य में ही होती है। अंत में, कवयित्री क्षमा माँगती हैं, यह भी नसीहत देने का एक विनम्र तरीका है जिसमें विवश होकर क्षमा माँगते हुए अपनी बात रखी जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

प्रश्न 10–'हवा' खून की उल्टियाँ क्यों कर रहा है ?

प्रश्न 11–पृथ्वी को 'बूढ़ी' क्यों कहा गया है ?

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न :–

प्रश्न 12–नदियों के रोने से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 13–पृथ्वी को प्रदूषण से बचाने हेतु आप क्या कर सकते हैं ? कविता के आधार पर बताइए।

वास्तुनिष्ठ बहुवैकल्पिक प्रश्न

14. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के रचनाकार कौन हैं ?

© JCERT not to be republished

(क) वंदना टेटे (ख) महादेव टोप्पो

(ग) निर्मला पुतुल (घ) शिवानी

15. मानवीकरण का अर्थ है ?

(क) जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना

(ख) दूसरों के सुख–दुख को अपना मानना

(ग) पेड़, पहाड़, नदी आदि के प्रति चिंता प्रकट करना

(घ) सच्चा मनुष्य बनने की क्रिया

16. कविता में पेड़ों के हजारों हजार हाथों के हिलने से क्या अभिप्राय है ?

(क) खुशी से झूम उठना (ख) रक्षा की गुहार लगाना

(ग) तूफान से काँपना (घ) हवा से थिरकना

17. 'खून की उल्टियाँ करते .... अपने घर के पिछवाड़े पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री –

(क) चंद लोगों के विकासस की यातना झेलने वाले वर्ग की पीड़ा का संकेत करती है।

(ख) घर के पिछले भागों को साफ–सुथरा रखने का आग्रह करती है।

(ग) प्रकृति पर मनुष्य की विजय का उद्घोष करती है।

(घ) क और ग दोनों

18. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में कौन–सी विशेषता नहीं मिलती ?

(क) मानवीकरण (ख) प्रश्न शैली

(ग) दृश्यात्मकता (घ) ओजस्विता

19. मानवीकरण नहीं है –

(क) पेड़ों का चीत्कार (ख) नदियों का रोना

© JCERT not to be republished

(ग) मौन समाधि के लिए बैठा पहाड़ (घ) पेड़ों की हिलती टहानियाँ

20. सुमेलित करें :—

(क)	रात के सन्नाटे में मुँह ढाँप कर रोना—	1.	पहाड़
(ख)	बचाव के लिए पुकारते हजारों हाथ —	2.	पृथ्वी
(ग)	सीने का दहलना —	3.	हवा
(घ)	खून की उल्टियाँ करना —	4.	नदी
(ङ)	बूढ़ी होना —	5.	पेड़

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1— इस कविता में कवयित्री किससे प्रश्न पूछ रही है?

उत्तर— इस कविता में कवयित्री पृथ्वी पर निवास कर रहे प्रत्येक व्यक्ति से प्रश्न पूछ रही है। जिसने अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण से खिलवाड़ किया है।

प्रश्न 2— पहाड़ का सीना क्यों दहलता है?

उत्तर— पहाड़ का सीना पहाड़ को तोड़ने के लिए किए गए विस्फोटों से दहलता है।

प्रश्न 3— कवयित्री को किसके आदमी होने पर संदेह है?

उत्तर— कवयित्री को उन संवेदनहीन मनुष्यों के आदमी होने पर संदेह है जो पृथ्वी का दुख नहीं समझते।

प्रश्न 4— बूढ़ी पृथ्वी को किस बात का दुख है?

उत्तर— बूढ़ी पृथ्वी को प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन एवं बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण का दुख है। बूढ़ी पृथ्वी को दुख है कि मनुष्य संवेदनहीन हो गया है।

भाषा संदर्भ

प्रश्न 1— पाठ में 'धमस' और 'ढाँप' जैसे शब्द आए हैं। जिनके अर्थ क्रमशः गंभीर चोट लगना, धम्म की आवाज के साथ जोरों का कंपन होना (दहलना) और 'ढँकना' है। इन शब्दों

© JCERT not to be republished

का प्रयोग झारखंड की विभिन्न बोलियों में भी होता है।

हिंदी में लोक भाषाओं में इस प्रकार के बहुत से शब्द आए हैं। इन शब्दों को देशज (देश + ज = देश में उत्पन्न) शब्द कहते हैं। पाठ की सहायता से अथवा आपस में चर्चा कर पाँच देशज शब्द ढूँढ़िए और उनसे एक–एक वाक्य बनाइए।

उत्तर– (i) घाट – नदियों के घाट पर ग्रामवासी स्नान करने जाते हैं।

(ii) अर्घ्य – छठ पर्व पर सूर्य देवता को अर्घ्य दिया जाता है।

(iii) पिछवाड़े – मेरे घर के पिछवाड़े एक बगीचा है।

(iv) बतियाना – किसी से दो पल बतियाना भी आज की दुनिया में मुश्किल है।

(v) गुमसुम – राजकुमार के जाने के बाद राजकुमारी अक्सर गुमसुम रहती थी।

प्रश्न 2– 'सुनाई पड़ा है कभी भरी दुपहरिया में।'

इस वाक्य को निम्नलिखित तरीके से भी लिखा जा सकता है –

'कभी भरी दुपहरिया में सुनाई पड़ी है।'

यहाँ पदों (शब्दों) के क्रम बदल दिए गए हैं। कविता में इस प्रकार के और भी वाक्य हैं जिनमें शब्दों के क्रम बदले गए हैं। इस प्रकार के वाक्यों को चुनिए और उनके पदों (शब्दों) का क्रम बदलकर पुनः लिखिए।

उत्तर–(1) पी रहा होगा कोई प्यासा पानी – कोई प्यासा पानी पी रहा होगा।

(2) जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर – जब कोई पत्थर दूर तक छिटकता है।

(3) कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर – जब धरती पर कोई पेड़ कटकर गिरता है।

पद्यांश के प्रश्नों के उत्तर

उत्तर (1)– इस कविता के सारे अंश में पर्यावरण के दुखों के बारे में वर्णन किया जा रहा है। पूरी कविता इंसानो के लिए प्रश्न के रूप में रखी गई है।

© JCERT not to be republished

उत्तर (2)— कवयित्री ने पेड़ों के बारे में कहा है कि पेड़ भी डरा हुआ होता है। वह भी चीखता चिल्लाता है और बचाव के लिए लोगों को पुकारता है।

उत्तर (3)— कवयित्री पेड़ों के लिए सभ्य समाज से जो लोग अपने उपयोग के लिए पेड़ों का नष्ट कर रहे हैं।

उत्तर (4)— कवयित्री पेड़ों के लिए मनुष्य से यह कहती हैं कि वे अपना स्वार्थ छोड़कर चीखते हुए पेड़ों का दुख महसूस करें और उन्हें बचाए। पेड़ों की टहनियों को उन्होंने बचाव के लिए पुकारते हाथ के रूप में देखा है।

उत्तर (5)— कवयित्री, कविता के दूसरे अंश में नदी के दुख के बारे में बता रही हैं। जो नदी जल के रूप में हमें जीवन देती है हम उसे ही प्रदूषित कर रहे हैं जैसे कारखाना का गंदा पानी को नदी में गिराना, कूड़ा भी नदी में डालना, धर्म और श्रद्धा के नाम पर कई चीजें प्रवाहित करना, प्रतिबंधित होने पर भी साबुन से नदी में स्नान करना आदि। उन्हीं कारणों से नदी दुखी है।

उत्तर (6)— कवयित्री, दुखी नदी के बारे में मनुष्य से पूछती हैं कि क्या कभी तुमने नदी के रोने की आवाज सुनी है? कवयित्री कल्पना कर रही हैं और इस रूदन को महसूस कर रही हैं। जैसे मनुष्य दुख में सिसकता है वैसे ही नदी घटते जल स्तर और प्रदूषण की वजह से रो रही हैं

उत्तर— (7) हमें नदी को साफ रखने के लिए उसे स्वच्छ रखने का प्रयास करना चाहिए। जैसे — कूड़ा—कचरा इत्यादि न गिराएँ, साबुन से नदी में स्नान न करें, मवेशियों को न धोएँ इत्यादि।

उत्तर (8)— कविता के तीसरे अंश में कवयित्री ने पहाड़ का दुख महसूस करने का आग्रह किया है।

उत्तर (9)— पहाड़ में डाइनामाइट लगाकर उसमें विस्फोट किया जाता है। इस विस्फोट से टूट कर छिटक कर वह दूर जा गिरता है फिर उसे हथौड़े से तोड़कर पत्थर सीमेंट आदि बनाने का काम लिया जाता है। इस प्रक्रिया में पहाड़ टूटकर बिखर जाता है।

उत्तर (10)— जिस प्रकार मनुष्य शुद्ध हवा न मिल पाने के कारण फेफड़ा के रोग से ग्रसित होता है और खून की उल्टियाँ करता है इसी प्रकार वायु भी प्रदूषण की मार से इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि खून की उल्टियाँ कर रही है।

उत्तर (11)— जिस तरह मनुष्य के अंग जैसे — दाँत, आँख, हड्डियाँ आदि कमजोर हो जाती है तो वह बूढ़ा हो जाता है इसी प्रकार धरती के भी पेड़—पौधे नदियाँ, पहाड़, हवा इत्यादि का नाश हो रहा है तो वह असमय 'बूढ़ी' होती जा रही है।

© JCERT not to be republished

अन्य महत्वपूर्ण के उत्तर

उत्तर (12)– पर्यावरण प्रदूषण के कारण नदियाँ सूख रही हैं। नदियाँ कूड़े–कर्कट से पट रही हैं उनके पानी गंदे हो रहे हैं। इस प्रकार नदियों में जल की कमी तथा नदियों का गंदा होना ही नदियों के रोने का तात्पर्य है।

उत्तर (13)– पृथ्वी को प्रदूषण से बचाने के लिए हमें वृक्षारोपण करना होगा, वृक्षों की रक्षा करनी होगी। नदियों की सफाई पर ध्यान देना होगा। पहाड़ों को टूटने से बचाना होगा। कल–कारखाने से निकलने वाली प्रदूषित गैस से बचने का उपाय करना होगा।

बहुवैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर

14. (ग) निर्मला पुतुल

15. (क) जो मानव नहीं उसे मानव के रूप कल्पित करना।

16. (ख) रक्षा की गुहार लगाना

17. (क) चंद लोगों के विकास की यातना झेलने वाले वर्ग की पीड़ा का संकेत करती है।

18. (घ) ओजस्विता

19. (घ) पेड़ों की हिलती टहनियाँ

20. (क) नदी

(ख) पेड़

(ग) पहाड़

(घ) हवा

(ङ) पृथ्वी

© JCERT not to be republished